लद्दाख में पैदल यात्राएँ

नीरज जाट

लद्दाख में पैदल यात्राएँ

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:

978-81-19927-45-6

Price: ₹ 299 .00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

लद्दाख में पैदल यात्राएँ

नीरज जाट

पुस्तक के बारे में

प्रस्तुत पुस्तक 'लद्दाख में पैदल यात्राएँ' एक यात्रा–वृत्तान्त है। जैसा कि नाम से विदित है कि इसमें मेरे द्वारा लद्दाख में की गई पैदल–यात्राओं अर्थात ट्रैकिंग का वर्णन है। इससे पहले ये यात्रा–वृत्तान्त मेरे ब्लॉग 'मुसाफिर हूँ यारों' में ऑनलाइन प्रकाशित हो चुके हैं। मित्रों के आग्रह और ब्लॉग–पाठकों के प्यार की बदौलत आखिरकार इन्हें पुस्तकाकार कराने का निर्णय लिया।

इसमें मुख्यतः दो भाग हैं – चादर ट्रेक और जांस्कर ट्रेक। चादर ट्रेक सर्दियों में खासकर जनवरी और फरवरी में ही होता है। इस ट्रैक को करने का उद्देश्य था, यह देखना कि सर्दियों में लद्दाख कैसा होता है और वहाँ लोग कैसा जीवन यापन करते हैं। जांस्कर ट्रैक में पदुम–दारचा ट्रैक का उल्लेख है और लद्दाख के भी सुदूरवर्ती इलाके जांस्कर के जीवन में झाँकने की छोटी–सी कोशिश की गई है। ये यात्राएँ केवल साक्षी–भाव से की गई हैं। अर्थात वहाँ जाकर अपने आसपास को देखना – बस। जो दिखा, वही लिख दिया। वहाँ के बारे में बहुत सारी धारणाएँ थीं – कुछ खण्डित हुईं, कुछ मजबूत हुईं।

भाषा–शैली रोचक और सरल बनाने की कोशिश की गई है। मैं कोई साहित्यकार नहीं हूँ, इसलिये इसमें साहित्य का वो पुट नहीं मिलेगा, जैसी उम्मीद की जाती है। इसे पढ़ते हुए आपको बिल्कुल वैसा ही महसूस होगा, जैसे कि आप स्वयं ही वहाँ विचर रहे हों और जैसा मनोभाव आपका होता, वैसा ही मनोभाव पुस्तक में पढ़ने को मिलेगा।

लेखक के बारे में

नामः नीरज जाट

जन्मः 24 जुलाई, 1988

निवासः मूल रूप से गाँव दबथुवा, जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश का निवासी, लेकिन खाने–कमाने के उद्देश्य से दिल्ली में जमा हुआ हूँ।

शिक्षा और रोजगारः मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा, इसी के आधार पर दिल्ली मेट्रो में 2009 से इंजीनियर। पढ़ाई की बोरियत से बचने के लिये आगे नहीं पढ़ा, बल्कि अपना ज्ञान विकसित करने के लिये घुमक्कड़ी के क्षेत्र में उतर गया।

बाकीः 2008 से अपने यात्रा–ब्लॉग 'मुसाफिर हूँ यारों' में नियमित हिन्दी यात्रा–वृत्तान्त लेखन। यहीं से इतनी शाबाशियाँ आती हैं कि मैं हर बार पहले से कठिन यात्रा करता जाता हूँ।

सम्पर्कः ब्लॉगः neerajjaatji.blogspot.in

फेसबुक पेजः http://facebook.com/NeerajJatJi

ई.मेलः neerajjaatji@gmail.com

आभार

किस–किस का आभार व्यक्त करूँ? यहाँ तो सामने आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के भी और सामने न आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के भी आभारी हैं। ब्लॉग के माध्यम से हजारों ऐसे मित्र हैं, जो चाहते हैं कि मैं घर से बाहर ही रहूँ। बाहर रहना, उतना भी ठीक था, लेकिन जब एक बार मेरी सुस्त यात्राओं से परेशान होकर एक मित्र ने कहा कि – हम साउथ की फिल्में इसलिये देखते हैं कि उनमें रोमांच होता है, इसी प्रकार आपका ब्लॉग भी रोमांच की खातिर ही पढते हैं – बस तभी से उन मित्र का आभारी हो गया। रोमांचकारी यात्राएं करने में इन अनजाने मित्रों का ही प्रमुख योगदान है।

वैसे तो घर–परिवार का भी आभार मानने की परम्परा रही है। इसलिये चलिये, हम भी घरवालों का आभार मान लेते हैं। अगर वे कहते कि बेटा, खूब यात्राएँ कर, यहाँ जा, वहाँ जा – तो मैं कभी भी घर से बाहर निकलने वाला नहीं था। लेकिन उन्होंने इसका विपरीत कहा, मैंने भी विपरीत ही किया।

तरुण गोयल भाई का आभार व्यक्त करूँगा, जिन्होंने धौलाधार और पीर पंजाल के दुर्गम पर्वत गद्दियों और गुज्जरों के साथ नाप डाले। उनके वृत्तान्त पढकर अपने अन्दर भी एहसास होता कि हम भी हिमालय का आनन्द ले सकते हैं।

सन्दीप पंवार भाई का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने एक दिन मजे–मजे में मुझे अपनी बाइक पर पीछे बैठाया और 5200 मीटर ऊँचे श्रीखण्ड महादेव की यात्रा करा लाये – दो दिन बाइक चलाने और तीन दिन पैदल चलने के बाद। इसी यात्रा के बाद मेरी साहसिक यात्राओं का सिलसिला चल पड़ा।

बाकी तो जाने–अनजाने बहुत सारे आभार हैं, जिनका उल्लेख करना सम्भव नहीं।

भूमिका

ब्लॉग लिखने का एक 'साइड–इफेक्ट' यह भी है कि भूमिका लिखनी नहीं सीख पाते। इधर एक यात्रा होती और शीघ्र ही ब्लॉग पर आ जाती – बिना भूमिका के ही। सबकुछ लिख देंगे। जो नहीं भी लिखना चाहिये, वो भी लिख मारेंगे, लेकिन भूमिका नहीं। इधर मैं सभी पुस्तकों में भूमिका भी अवश्य लिखी देखता हूँ। अब हम भी लेखक बनने जा रहे हैं, तो भला हमारी पुस्तक क्यों बिना भूमिका के छपेगी?

तरुण गोयल भाई से बात की – "भाई जी, ये बात है, किताब छप रही है। लेकिन भूमिका का चक्कर समझ नहीं आ रहा।" बोले – "अरे जाटराम, कुछ नहीं है भूमिका में। बडी आसान है..."। वे कुछ और समझाते, उससे पहले मैंने ही कह दिया – "तो भाई, आप ही लिख दो कुछ।" जैसे वे तैयार ही बैठे थे, लिखना शुरू कर दिया –

"'लद्दाख में पैदल यात्राएं' पुस्तक के लिए मैं नीरज जाट को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। लद्दाख और जांस्कर जैसे कठिन भूभाग को पैदल नापना अपने आप में एक सराहनीय प्रयास है।

जांस्कर, चादर, पदुम, दारचा ये सब नाम शायद एक आम हिन्दुस्तानी ने कभी न सुने हों, पर जिस खूबी से नीरज ने इन जगहों को अपने शब्दों से सजाया है और चित्रों से संजोया है – आपको एक पल के लिए भी नहीं लगेगा कि सिर्फ नीरज यात्रा कर रहा है।

चादर ट्रैक में गुफा में बिताई एक रात हो या दारचा–पदुम की बे–दम करने वाली चढ़ाई हो या लद्दाख के अद्भुत हिमाच्छादित पर्वत हों – हर पल आप पाएँगे कि जैसे यात्रा नीरज नहीं, आप कर रहे हों।

नीरज उम्र में बेशक मुझसे छोटा है, लेकिन घुमक्कडी के मामले में मुझसे ही नहीं, देश के कई नामी गिरामी 'ट्रैवल ब्लॉगरों' से कहीं बड़ा है।

नीरज की लेखनी में न तो बड़े–बड़े होटल हैं और न ही बड़ी–बड़ी गाड़ियाँ। पर नीरज की लेखनी में सबसे बड़ी बात है, उसका जमीन से जुड़ाव। सरलतम शब्दों में गूढ़ बात समझा जाना ही नीरज की खासियत है।

हिंदी यात्रा लेखनी में नीरज ने न केवल अपना एक मुकाम हासिल किया है, अपितु अपने साथ अनेक लोगों को प्रोत्साहित भी किया है – हिंदुस्तान को जानने, समझने में। यात्राओं से बड़ा कोई गुरु नहीं होता और नीरज ने अनेक लोगों को अपनी लेखनी द्वारा 'यात्रा गुरु' से मिलवाया है।

और यह पुस्तक सिर्फ नीरज की घुमक्कडी के बारे में नहीं है। आज इंटरनेट की दुनिया में कैसे दूर–दराज के लोग एक–दूसरे से जुड़ रहे हैं, उसका भी एक बहुत बड़ा उदाहरण नीरज का ब्लॉग है। इसी ब्लॉग के द्वारा मैं और नीरज आपस में जुड़े।

इसी ब्लॉग के द्वारा अनगिनत लोगों से नीरज की दोस्ती हुई – जिनसे शायद कभी मिलना भी न हो पाये।

इसी ब्लॉग के द्वारा इस पुस्तक का शुभारम्भ हुआ।"

इतना लिखने के बाद गोयल साहब रुक गये। बोले – "इतना काफी है क्या?" मैंने कहा – "काफी तो है लेकिन आपने लिखने में बहुत कंजूसी की।" कंजूस उपनाम मिलते ही साहब फिर से स्टार्ट होने लगे – "अबे नहीं। कंजूस–वंजूस नहीं हूँ। मैं और भी लिख सकता हूँ। मैंने सोचा ज्यादा हो जायेगा, इसलिये रुक गया। अभी ले, और थोडा लिखता हूँ। लेखन कोई बाहर से थोडे ही लाना है? अपने ही घर की खेती है।"

"पुस्तक में वो सब बातें कही गयीं हैं, जो किन्हीं कारणवश ब्लॉग में नहीं बताई जा सकतीं – जैसे कि शब्दों की अधिकता का डर, जो ब्लॉग में रहता है लेकिन पुस्तक में नहीं।

वैसे तो नीरज का कहना है कि उसकी लेखनी में लोगों को 'साहित्यिक पुट' नहीं मिलेगा, लेकिन मेरा मानना है कि इतिहास और जनश्रुतियों को नीरज से बेहतर आज के दौर का कोई भी यात्रा–लेखक नहीं समझा सकता। बोरियत से भरे संख्या ज्ञान से परे, नीरज की लेखनी आपको इतिहास के गजब दर्शन करवाती है, जिसे पढ़कर आप मुस्कुराये बिना नहीं रह सकते।

नीरज जाट को उसकी पहली पुस्तक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ और आगे भी उसकी घुमक्कडी और लेखनी के चर्चे विश्व भर में हों, यही मनोकामना है।"

इतना कहकर वे फिर से चुप हो गये। मुझे धौलाधार, पीर पंजाल और लाहौल–कुल्लू के विशेषज्ञ का आशीर्वाद मिल चुका था। अब किसी भूमिका की आवश्यकता नहीं।

या फिर यही इस पुस्तक की भूमिका है।

–नीरज जाट

जनवरी में लद्दाख और चादर ट्रैक

लद्दाख यात्रा की तैयारी

पता नहीं क्या हुआ, कैसे हुआ कि मुझे जनवरी में लद्दाख जाना पड़ गया। कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा हो जायेगा। हवाई जहाज से जाना पड़ता है जनवरी में वहाँ। कहाँ हवाई जहाज, कैसा हवाई जहाज – इधर तो कुछ पता ही नहीं था। लद्दाख जाऊँगा अवश्य, लेकिन जनवरी में? ना जी ना। फिर एक दिन अखबार में पेंगोंग झील का फोटो देखा जिसमें जमी हुई झील पर एक गाड़ी खड़ी थी और लोग मजे से फोटो खींच रहे थे। इस फोटो ने तो रोंगटे खड़े कर दिये। अच्छी–खासी ठण्ड होती है, यह तो पता था।

लेकिन ऐसी भी ठण्ड होती है, इसका कोई अन्दाजा नहीं था। हम जब तक इन चीजों का सामना नहीं कर लेते, कभी भी इनकी वास्तविकता नहीं जान सकते। मुझे कभी एहसास ही नहीं हुआ कि शून्य से नीचे भी कोई ठण्ड होती है। मेरे लिये शून्य डिग्री ही सीमा थी। बस, इससे कम नहीं। इससे कम तापमान के बारे में विज्ञान की किताब में पढ़ा था, लेकिन वो प्रयोगशालाओं की बात लगती थी। मैं शर्त लगा बैठता था कि शून्य डिग्री ही अन्तिम सीमा है। शून्य डिग्री पर पानी जम जायेगा और बात खत्म। इस झील में पानी जमा हुआ है, तो बस शून्य डिग्री है।

अब इधर हमने भी दसवीं तक की भौतिकी अच्छी तरह पढ़ रखी थी। बर्फ पानी के ऊपर तैरती है, नीचे पानी होता है। इसका अर्थ है कि झील में जो बर्फ दिख रही है, वो पानी पर तैर रही है और उसके नीचे पानी है। चार डिग्री पर पानी का घनत्व सर्वाधिक होता है तो शून्य डिग्री की बर्फ के नीचे चार डिग्री का पानी विद्यमान है। बर्फ कितनी मोटी है, पता नहीं। कहीं से अगर टूट–टाट गई तो पानी में जा पड़ेंगे और फिर कभी नहीं निकल सकेंगे। बस, यही सोचता रहता था और दोस्तों से विमर्श करता रहता था। दोस्त भी अपने मेरे ही जैसे थे। मैं तो केवल पानी में जा पड़ने तक ही सीमित रहता था, वे लोग दो पायदान और ऊपर

जा चढ़ते थे – लाश पानी में बर्फ के नीचे दिखती रहेगी, लेकिन कभी निकाली नहीं जा सकेगी, ठण्ड के कारण न सड़ेगी और न गलेगी, अनन्त काल तक। तो जी, मण्डली ने तय कर लिया कि ऐसी जगह जायेंगे ही नहीं। ऐसी जगह कहाँ है? पता नहीं। एक पढ़ाकू ने ढूंढ निकाला – लद्दाख में है ऐसी जगह। लद्दाख कहाँ है? बड़े दिनों तक ढूंढ मचती रही, तब जाकर किसी नक्शे में मिला।

जब मैं जुलाई 2010 में अमरनाथ से लौट रहा था तो बालटाल में लद्दाख की पहली झलक दिखी, बहुत छोटी सी झलक। सामने विराट जोजीला था और उस पर ऊपर चढ़ती सड़क और उस पर चलती नन्हीं–नन्हीं दिखती गाड़ियाँ। अब तक तो पता चल ही गया था कि जोजीला के उस तरफ लद्दाख है। लद्दाख ने हमें आकर्षित कर लिया। हमारा छः लोगों का ग्रुप था।

एक बार तो विचार भी आया कि जोजीला पार करते हैं और लेह न सही, लेकिन लद्दाख में प्रवेश करके देखते हैं। उसी दिन श्रीनगर में कर्फ्यू लग गया और फिर हम सभी लद्दाख को भूलकर यह सोचने लगे कि श्रीनगर को कैसे पार करें। खैर, तब लद्दाख जाना रह गया, लेकिन उसकी जो पहली झलक दिखी, उसी ने मन मोह लिया।

जोजीला कश्मीर की तरफ से लद्दाख का प्रवेश द्वार है। उधर हिमाचल की तरफ से रोहतांग पार करके लद्दाख जाया जाता है। नवम्बर 2011 में पहली बार रोहतांग देखा। लेकिन जैसा डेढ़ साल पहले जोजीला देखा था, वैसा ही इस बार रोहतांग देखा। दूर से जोजीला देखा था, दूर से ही रोहतांग। नवम्बर के महीने में रोहतांग पर बर्फबारी होने लगती है, उस दिन भी बर्फबारी हो रही थी और वहाँ जाने वाली सड़क बन्द हो गई थी। हम सोलांग घूमकर ही लौट आये।

इस बार लद्दाख तो नहीं जाना था, लेकिन लद्दाख ने यह जरूर बता दिया कि वहाँ जाना उतना आसान नहीं है।

एक सरकारी कर्मचारी होने के नाते मेरा यह दायित्व है कि मैं हर चार साल में एक बार सरकारी खर्चे से भारत के किसी भी हिस्से की यात्रा करके आऊँ। इसे एल.टी.सी. कहते हैं। इस यात्रा में हमें पूर्वोत्तर और जम्मू–कश्मीर के लिये हवाई खर्चा भी मिलता है। पूर्वोत्तर और जम्मू–कश्मीर में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये ऐसा होता है। वैसे तो इन राज्यों के कुछ इलाकों में कोई जाना नहीं चाहता, लेकिन हवाई जहाज के लालच में कुछ लोग चले जाते हैं।

जब हवाई खर्चा मिल ही रहा है तो क्यों न लद्दाख जाया जाये? चूँकि सर्दियों में वहाँ जाने वाली दोनों सडकें बन्द हो जाती हैं, एकमात्र साधन वायुयान ही होता है, तो मन में यही आया कि वायुयान का लाभ उठाया जाये और सर्दियों में जाकर देखा जाये कि लद्दाख कैसा है। इस बहाने उस झील को भी देख लेंगे – लेकिन देखेंगे दूर से ही। पास नहीं जायेंगे। गर्मियों में तो कभी भी चले जायेंगे।

जब मुझे पता चलता कि आज दिल्ली में तापमान चार डिग्री है, कल पाँच डिग्री था, तो रूह तक कांप जाती कि मात्र एक डिग्री के अन्तर से जाड़े में इतना फर्क पड़ जाता है तो अचानक बीस–पच्चीस डिग्री का अन्तर शरीर कैसे झेलेगा? दोस्तों ने भी डराया कि अगर जुकाम हो गया तो नाक से बर्फ की गोलियाँ टपकेंगी। लद्दाख में सर्दियों में तापमान शून्य से तीस डिग्री नीचे तक पहुँच जाता है। नदियाँ, झीलें, तालाब तक जम जाते हैं।

फिर भी लगन हो गई कि जनवरी में लद्दाख जाना है। देखना है कि वहाँ जीवन कैसे चलता है? कैसे लोग जमी हुई नदी के ऊपर पैदल आना–जाना करते हैं? कैसे गैर–लद्दाखी जैसे कि सेना के जवान वहाँ रहते हैं? मित्र डॉक्टर करण से बात हुई तो उसने दो लोगों के सम्पर्क–सूत्र बता दिये। वो पिछले साल जनवरी में ही लेह गया था, तो उसके कुछ जानने वाले थे।

फिर घर पर बात की तो तुरन्त एक परिचित विकास का पता चल गया। विकास सी.आर.पी.एफ. में है और उन दिनों लेह में ही तैनात था। विकास से बात करके रहने–खाने की चिन्ताओं से मुक्त हो गया।

अक्सर लोग लेह और लद्दाख को अलग–अलग मानते हैं। असल में हकीकत यह है कि जम्मू–कश्मीर राज्य तीन भागों में विभाजित है – जम्मू, कश्मीर और लद्दाख। जम्मू क्षेत्र में जवाहर सुरंग से पहले का इलाका आता है और इसमें कठुआ, साम्बा, जम्मू, ऊधमपुर, डोडा, किश्तवाड़, राजौरी, रियासी, पुंछ आदि जिले आते हैं। कश्मीर क्षेत्र में जवाहर सुरंग के बाद का इलाका आता है और इसमें अनन्तनाग, श्रीनगर, बड़गाम, बारामूला, कुपवाडा आदि जिले आते हैं। अब बचा लद्दाख, श्रीनगर–लेह मार्ग पर सोनमर्ग से कुछ आगे जोजीला दर्रा पार करते ही लद्दाख क्षेत्र शुरू हो जाता है और इसमें कारगिल व लेह जिले शामिल हैं। फिर भी आम बोलचाल में लेह को लद्दाख कह दिया जाता है। लेह और लद्दाख अलग–अलग नहीं हैं।

पुस्तक के बारे में

प्रस्तुत पुस्तक 'लद्दाख में पैदल यात्राएँ' एक यात्रा–वृत्तान्त है। जैसा कि नाम से विदित है कि इसमें मेरे द्वारा लद्दाख में की गई पैदल–यात्राओं अर्थात ट्रैकिंग का वर्णन है। इससे पहले ये यात्रा–वृत्तान्त मेरे ब्लॉग 'मुसाफिर हूँ यारो' में ऑनलाइन प्रकाशित हो चुके हैं। मित्रों के आग्रह और ब्लॉग–पाठकों के प्यार की बदौलत आखिरकार इन्हें पुस्तकाकार कराने का निर्णय लिया। इसमें मुख्यतः दो भाग हैं – चादर ट्रैक और जांस्कर ट्रैक। चादर ट्रैक सर्दियों में खासकर जनवरी और फरवरी में ही होता है। इस ट्रैक को करने का उद्देश्य था, यह देखना कि सर्दियों में लद्दाख कैसा होता है और वहाँ लोग कैसा जीवन यापन करते हैं। जांस्कर ट्रैक में पदुम–दारचा ट्रैक का उल्लेख है और लद्दाख के भी सुदूरवर्ती इलाके जांस्कर के जीवन में झाँकने की छोटी–सी कोशिश की गई है। ये यात्राएँ केवल साक्षी–भाव से की गई हैं। अर्थात वहाँ जाकर अपने आसपास को देखना – बस। जो दिखा, वही लिख दिया। वहाँ के बारे में बहुत सारी धारणाएँ थीं – कुछ खण्डित हुईं, कुछ मजबूत हुईं। भाषा–शैली रोचक और सरल बनाने की कोशिश की गई है। मैं कोई साहित्यकार नहीं हूँ, इसलिये इसमें साहित्य का वो पुट नहीं मिलेगा, जैसी उम्मीद की जाती है। इसे पढ़ते हुए आपको बिल्कुल वैसा ही महसूस होगा, जैसे कि आप स्वयं ही वहाँ विचर रहे हों और जैसा मनोभाव आपका होता, वैसा ही मनोभाव पुस्तक में पढ़ने को मिलेगा।

लेखक के बारे में

नामः नीरज जाट

जन्मः 24 जुलाई, 1988

निवासः मूल रूप से गाँव दबथुवा, जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश का निवासी, लेकिन खाने–कमाने के उद्देश्य से दिल्ली में जमा हुआ हूँ।

शिक्षा और रोजगारः मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा, इसी के आधार पर दिल्ली मेट्रो में 2009 से इंजीनियर। पढ़ाई की बोरियत से बचने के लिये आगे नहीं पढ़ा, बल्कि अपना ज्ञान विकसित करने के लिये घुमक्कड़ी के क्षेत्र में उतर गया। बाकीः 2008 से अपने यात्रा–ब्लॉग 'मुसाफिर हूँ यारो' में नियमित हिन्दी यात्रा–वृत्तान्त लेखन। यहीं से इतनी शाबाशियाँ आती हैं कि मैं हर बार पहले से कठिन यात्रा करता जाता हूँ।

लेखक से सम्पर्क हेतुः

neerajjaatji@gmail.com

http://facebook.com/NeerajJatJi

FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE

Flipkart GET IT ON Google Play

amazon amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-45-4

9 788119 927456